Resource: अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord)

License Information

अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord) (Hindi) is based on: unfoldingWord® Translation Questions, unfoldingWord, 2022, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord)

ECC

सभोपदेशक 1:1, सभोपदेशक 1:4, सभोपदेशक 1:8, सभोपदेशक 1:9, सभोपदेशक 1:13, सभोपदेशक 1:14, सभोपदेशक 1:18, सभोपदेशक 2:1, सभोपदेशक 2:3, सभोपदेशक 2:6, सभोपदेशक 2:8, सभोपदेशक 2:10, सभोपदेशक 2:11, सभोपदेशक 2:14, सभोपदेशक 2:16, सभोपदेशक 2:18, सभोपदेशक 2:20, सभोपदेशक 2:23, सभोपदेशक 2:24, सभोपदेशक 2:26, सभोपदेशक 3:1, सभोपदेशक 3:10, सभोपदेशक 3:11, सभोपदेशक 3:13, सभोपदेशक 3:14, सभोपदेशक 3:16, सभोपदेशक 3:19–20, सभोपदेशक 3:22, सभोपदेशक 4:1, सभोपदेशक 4:3, सभोपदेशक 4:6, सभोपदेशक 4:9–10, सभोपदेशक 4:12, सभोपदेशक 4:13, सभोपदेशक 4:16, सभोपदेशक 5:1, सभोपदेशक 5:2, सभोपदेशक 5:5, सभोपदेशक 5:8, सभोपदेशक 5:11, सभोपदेशक 5:12, सभोपदेशक 5:14, सभोपदेशक 5:15, सभोपदेशक 5:20, सभोपदेशक 6:1–2, सभोपदेशक 6:3, सभोपदेशक 6:6, सभोपदेशक 6:7, सभोपदेशक 6:11, सभोपदेशक 7:2, सभोपदेशक 7:4, सभोपदेशक 7:6, सभोपदेशक 7:7, सभोपदेशक 7:9, सभोपदेशक 7:12, सभोपदेशक 7:14, सभोपदेशक 7:15, सभोपदेशक 7:18, सभोपदेशक 7:21, सभोपदेशक 7:24, सभोपदेशक 7:26, सभोपदेशक 7:28, सभोपदेशक 8:1, सभोपदेशक 8:3, सभोपदेशक 8:5, सभोपदेशक 8:8, सभोपदेशक 8:10, सभोपदेशक 8:12, सभोपदेशक 8:15, सभोपदेशक 8:17, सभोपदेशक 9:1, सभोपदेशक 9:2, सभोपदेशक 9:3, सभोपदेशक 9:5, सभोपदेशक 9:6, सभोपदेशक 9:10, सभोपदेशक 9:12, सभोपदेशक 9:15, सभोपदेशक 9:18, सभोपदेशक 10:3, सभोपदेशक 10:7, सभोपदेशक 10:8, सभोपदेशक 10:10, सभोपदेशक 10:13, सभोपदेशक 10:16, सभोपदेशक 10:18, सभोपदेशक 10:20, सभोपदेशक 11:2, सभोपदेशक 11:5, सभोपदेशक 11:6, सभोपदेशक 11:10, सभोपदेशक 12:1, सभोपदेशक 12:3, सभोपदेशक 12:4, सभोपदेशक 12:7, सभोपदेशक 12:9, सभोपदेशक 12:11, सभोपदेशक 12:12, सभोपदेशक 12:13

सभोपदेशक 1:1

उपदेशक किस का पुत्र था?

उपदेशक यरूशलेम के राजा दाऊद का पुत्र था।

सभोपदेशक 1:4

क्या सर्वदा बनी रहती है?

पृथ्वी सर्वदा बनी रहती है।

सभोपदेशक 1:8

आँखें किससे तृप्त नहीं होती?

आँखें देखने से तृप्त नहीं होती।

सभोपदेशक 1:9

वह क्या है जो फिर होगा?

जो कुछ हुआ था, वही फिर होगा।

सभोपदेशक 1:13

उपदेशक ने अपना मन किस पर लगाया है?

उपदेशक ने अपने मन को लगाया कि वह बुद्धि से आकाश के नीचे की हर एक बात सोच सोचकर मालूम करे।

सभोपदेशक 1:14

सूर्य के नीचे किए गए सब कामों का क्या फल होता है?

सूर्य के नीचे किए गए सब काम व्यर्थ और मानो वायु को पकड़ने का प्रयास हैं।

सभोपदेशक 1:18

कहाँ खेद है?

बहुत बुद्धि के साथ बहुत खेद भी होता है।

सभोपदेशक 2:1

क्या व्यर्थ है?

आनन्दित और मगन होना व्यर्थ है।

सभोपदेशक 2:3

उपदेशक क्या मालूम करना चाहता था?

उपदेशक यह मालूम करना चाहता था कि वह अच्छा काम कौन सा है जिसे मनुष्य अपने जीवन भर करता रहे।

सभोपदेशक 2:6

उपदेशक ने कुण्ड क्यों खुदवाए?

उपदेशक ने वन सींचने के लिए कुण्ड खुदवाया था।

सभोपदेशक 2:8

उपदेशक ने ऐसे काम कैसे किए जो पृथ्वी पर किसी भी मनुष्य को सुख पहुँचा सकते हैं?

बहुत सी कामिनियों के माध्यम से उसने वे काम किए जो पृथ्वी पर किसी भी मनुष्य को सुख पहुँचा सकते थे।

सभोपदेशक 2:10

उपदेशक का मन किसमें आनन्दित होता है?

उपदेशक का मन उसके सब परिश्रम के कारण आनन्दित होता है।

सभोपदेशक 2:11

कहाँ लाभ नहीं है?

सूर्य के नीचे कोई लाभ नहीं है।

सभोपदेशक 2:14

दोनों की दशा कैसी होती है?

दोनों की दशा एक सी होती है।

सभोपदेशक 2:16

किसका स्मरण सर्वदा बना न रहेगा?

बुद्धिमान मनुष्य भी, मूर्ख की तरह, अधिक समय तक स्मरण नहीं किया जाएगा।

सभोपदेशक 2:18

उपदेशक अपनी सब उपलब्धियों से घृणा क्यों करता था?

उपदेशक ने अपनी सारी उपलब्धियों से घृणा की, क्योंकि उसे उन्हें अपने बाद आने वाले मनुष्य के लिए छोड़ जाना था।

सभोपदेशक 2:20

उपदेशक का हृदय उसके काम के विषय में कैसा महसूस करता था?

उपदेशक का हृदय उसके द्वारा किए गए सब कामों से निराश हुआ।

सभोपदेशक 2:23

मन लगा लगाकर परिश्रम करने वाले का मन रात में भी क्यों चैन नहीं पाता?

उसके सब दिन तो दुःखों से भरे रहते हैं, और उसका काम खेद के साथ होता है, इसलिए रात को भी उसका मन चैन नहीं पाता।

सभोपदेशक 2:24

मनुष्य के लिये किस बात के सिवाय और कुछ भी अच्छा नहीं?

मनुष्य के लिये खाने-पीने और परिश्रम करते हुए अपने जीव को सुखी रखने के सिवाय और कुछ भी अच्छा नहीं।

सभोपदेशक 2:26

परमेश्वर पापी को क्या देते हैं?

पापी को परमेश्वर दुःख भरा काम देते हैं कि वह उसको देने के लिये संचय करके ढेर लगाए जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा हो।

सभोपदेशक 3:1

किस बात का एक अवसर होता है?

प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है।

सभोपदेशक 3:10

उपदेशक ने क्या देखा था?

उपदेशक ने वह कार्य देखा जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उसमें लगे रहें।

सभोपदेशक 3:11

परमेश्वर ने मनुष्यों के मन में क्या रखा है?

परमेश्वर ने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्तकाल का ज्ञान उत्पन्न किया है।

सभोपदेशक 3:13

परमेश्वर का दान क्या है?

मनुष्य के सब परिश्रम से जो सुख प्राप्त होता है, वह परमेश्वर का दान है।

सभोपदेशक 3:14

परमेश्वर जो कुछ करते हैं उसमें कुछ बढ़ाया या घटाया क्यों नहीं जा सकता?

इसमें कुछ भी बढ़ाया नहीं जा सकता और न ही इससे कुछ भी घटाया जा सकता है, क्योंकि यह परमेश्वर हैं जिन्होंने इसे किया है।

सभोपदेशक 3:16

धार्मिकता के स्थान पर अक्सर क्या देखा जाता है?

धार्मिकता के स्थान पर अक्सर दुष्टता होती है।

सभोपदेशक 3:19–20

मनुष्य पशुओं के समान कैसे हैं?

जैसे पशु मरते हैं, वैसे ही मनुष्य भी मरते हैं। वे सब एक ही श्वास लेते हैं। सब मिट्टी से बने हैं, और सब मिट्टी में फिर मिल जाते हैं।

सभोपदेशक 3:22

प्रत्येक मनुष्य का काम क्या है?

प्रत्येक मनुष्य का काम यह है कि वे अपने कामों में आनन्दित रहे।

सभोपदेशक 4:1

किसके लिए कोई शान्ति देने वाला नहीं है?

अंधेर सहनेवालों के आंसुओं के लिए कोई शान्ति देने वाला नहीं है।

सभोपदेशक 4:3

जीवितों और मृतकों दोनों से अधिक अच्छा कौन है?

जीवित और मृत दोनों की तुलना में अधिक अच्छा वह है जो अब तक हुआ ही नहीं है।

सभोपदेशक 4:6

दो मुट्ठी से अच्छा क्या है जिनके साथ परिश्रम और वायु को पकड़ना हो?

चैन के साथ एक मुट्ठी उन दो मुट्ठियों से अच्छा है, जिनके साथ परिश्रम और वायु को पकड़ना हो।

सभोपदेशक 4:9–10

यदि एक मनुष्य गिर जाए तो दो मनुष्य एक से बेहतर क्यों होते हैं?

दो लोग एक से बेहतर होते हैं क्योंकि यदि उनमें से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा।

सभोपदेशक 4:12

क्या जल्दी नहीं टूटती?

डोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती।

सभोपदेशक 4:13

बूढ़े और मूर्ख राजा से उत्तम कौन है?

बुद्धिमान लड़का दरिद्र होने पर भी ऐसे बूढ़े और मूर्ख राजा से अधिक उत्तम है।

सभोपदेशक 4:16

लोग नए प्रधान के साथ क्या करना चाहते हैं?

लोग नए राजा का अनुसरण करना चाहते हैं।

सभोपदेशक 5:1

लोगों को परमेश्वर के भवन में क्यों जाना चाहिए?

लोगों को परमेश्वर का वचन सुनने के लिए उनके भवन में जाना चाहिए।

सभोपदेशक 5:2

लोगों को अपने वचन थोड़े ही क्यों रखने चाहिए?

परमेश्वर स्वर्ग में हैं और लोग पृथ्वी पर है; इसलिए लोगों के वचन थोड़े ही होने चाहिए।

सभोपदेशक 5:5

किसी मनुष्य के लिए क्या करना अधिक अच्छा है बजाय इसके कि वह कोई मन्नत माने जिसे वह पूरा न करे?

किसी मनुष्य के लिए मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत का न मानना ही अच्छा है।

सभोपदेशक 5:8

जब कोई निर्धनों पर अंधेर होते और न्याय और धर्म को बिगड़ता देखता है, तो किसी को चकित क्यों नहीं होनी चाहिए, जैसे कि कोई कुछ नहीं जानता?

जब कोई निर्धनों पर अंधेर होते और न्याय और धर्म को बिगड़ता देखता है, तो किसी को चकित नहीं होना चाहिए, क्योंकि एक अधिकारी से बड़ा दूसरा रहता है जिसे इन बातों की सुधि रहती है, और उनसे भी और अधिक बड़े रहते हैं।

सभोपदेशक 5:11

जब सम्पत्ति बढ़ती है, क्या होता है?

जब सम्पत्ति बढ़ती है, तो उसके खानेवाले भी बढ़ते हैं।

सभोपदेशक 5:12

एक धनी को अच्छी नींद लेने से क्या बाधित करता है?

एक धनी के धन बढ़ने के कारण उसको नींद नहीं आती।

सभोपदेशक 5:14

जब एक धनी अपने धन को बुरे काम के कारण खो देता है, तो क्या होता है?

जब एक धनी का धन किसी बुरे काम में उड़ जाता है; और उसके घर में बेटा उत्पन्न होता है परन्तु उसके हाथ में कुछ नहीं रहता।

सभोपदेशक 5:15

एक मनुष्य कैसे जन्म लेता है और वह इस जीवन से कैसे लौटेगा?

एक मनुष्य अपनी माँ के पेट से नंगा आया है, और वैसे ही वह इस जीवन को नग्न छोड़ देगा।

सभोपदेशक 5:20

एक मनुष्य को उसके जीवन के दिन बहुत स्मरण क्यों नहीं रहेंगे?

एक मनुष्य को उसके जीवन के दिन बहुत स्मरण न रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर उसकी सुन सुनकर उसके मन को आनन्दमय रखता है।

सभोपदेशक 6:1–2

उपदेशक ने कौन-सी बुराई देखी?

उपदेशक ने देखा कि परमेश्वर किसी मनुष्य को धन-सम्पत्ति और प्रतिष्ठा यहाँ तक देते हैं कि जो कुछ उसका मन चाहता है उसे उसकी कुछ भी घटी नहीं होती, तो भी परमेश्वर उसको उसमें से खाने नहीं देता, कोई दूसरा ही उसे खाता है।

सभोपदेशक 6:3

यदि किसी पुरुष का प्राण प्रसन्न न रहे है और न उसकी अन्तिम क्रिया की जाए, तो उससे उत्तम कौन है?

यदि किसी पुरुष का प्राण प्रसन्न न रहे है और न उसकी अन्तिम क्रिया की जाए, तो ऐसे मनुष्य से अधूरे समय का जन्मा हुआ बच्चा उत्तम है।

सभोपदेशक 6:6

यदि कोई मनुष्य दो हजार वर्ष तक भी जीवित रहे, परन्तु कुछ सुख भोगने न पाए, तो वह कहाँ जाता है?

यदि कोई मनुष्य दो हजार वर्ष तक भी जीवित रहे, परन्तु कुछ सुख भोगने न पाए, तो वह भी उसी स्थान पर जाता है जहाँ बाकी सब जाते हैं।

सभोपदेशक 6:7

मनुष्य का सारा परिश्रम उसके पेट के लिये होता है, फिर भी क्या होता है?

मनुष्य का सारा परिश्रम उसके पेट के लिये होता है तो भी उसका मन नहीं भरता।

सभोपदेशक 6:11

जितने अधिक बातें बोली जाती हैं, उससे क्या होता है?

जितने अधिक बातें बोली जाती हैं, उतनी ही अधिक व्यर्थता होती है।

सभोपदेशक 7:2

भोज के घर जाने से शोक ही के घर जाना उत्तम क्यों है?

भोज के घर जाने से शोक ही के घर जाना उत्तम है; क्योंकि सब मनुष्यों का अन्त यही है।

सभोपदेशक 7:4

बुद्धिमान का मन कहाँ लगा रहता है?

बुद्धिमानों का मन शोक करनेवालों के घर की ओर लगा रहता है।

सभोपदेशक 7:6

मूर्खों की हँसी कैसी होती है?

मूर्ख की हँसी हाण्डी के नीचे जलते हुए काँटों की चरचराहट के समान होती है।

सभोपदेशक 7:7

एक बुद्धिमान को कौन सी बात मूर्ख बनाती है?

घूस एक बुद्धिमान को भी मूर्ख बना देती है।

सभोपदेशक 7:9

लोगों को अपने मन में उतावली से क्यों क्रोधित नहीं होना चाहिए?

लोगों को अपने मन में उतावली से क्रोधित नही होना चाहिए, क्योंकि क्रोध मूर्खों ही के हृदय में रहता है।

सभोपदेशक 7:12

बुद्धि रुपये से श्रेष्ठ क्यों है?

बुद्धि की आड़ रुपये की आड़ का काम देता है; परन्तु ज्ञान की श्रेष्ठता यह है कि बुद्धि से उसके रखनेवालों के प्राण की रक्षा होती है।

सभोपदेशक 7:14

सुख के दिन लोगों को कैसे जीना चाहिए?

सुख के दिन सुख मान से जीना चाहिए।

सभोपदेशक 7:15

उपदेशक ने जिन दुष्ट लोगों को देखा, उनके साथ क्या हुआ?

उपदेशक ने दुष्ट लोगों को देखा जो दुष्ट बुराई करते हुए दीर्घायु होता है।

सभोपदेशक 7:18

उस मनुष्य का क्या होगा जो परमेश्वर का भय मानता है?

जो परमेश्वर का भय मानता है वह इन सब कठिनाइयों से पार हो जाएगा।

सभोपदेशक 7:21

जितनी बातें कही जाती हैं उन सब पर लोगों को कान क्यों नहीं लगाना चाहिए?

जितनी बातें कही जाएँ सब पर कान नहीं लगाना चाहिए, कही ऐसा न हो कि वे सुनें कि उनका दास उन्हीं को श्राप देता है।

सभोपदेशक 7:24

बुद्धि कहाँ पर थी?

बुद्धि दूर थी।

सभोपदेशक 7:26

पापी किसका शिकार होगा?

पापी को एक ऐसी स्त्री द्वारा फंसाया जाएगा जिसका मन फंदा और जाल है, और जिसके हाथ हथकड़ियाँ है।

सभोपदेशक 7:28

यद्यपि उपदेशक ने हजार में से एक धर्मी पुरुष पाया, परन्तु उसने क्या नहीं पाया?

हालांकि उपदेशक ने हजारों में से एक धार्मिक पुरुष पाया, परन्तु उनमें एक भी स्त्री नहीं पाई।

सभोपदेशक 8:1

बुद्धिमान मनुष्य कौन है?

एक बुद्धिमान मनुष्य वह होता है जो जानता है कि जीवन की घटनाओं का क्या अर्थ होता है।

सभोपदेशक 8:3

राजा के सामने से उतावली के साथ क्यों नही लौटना चाहिए और बुरी बात पर हठ क्यों नहीं करना चाहिए?

राजा के सामने से उतावली के साथ नहीं लौटना चाहिए और बुरी बात पर हठ नहीं करना, क्योंकि वह जो कुछ चाहता है वही करता है।

सभोपदेशक 8:5

कौन जोखिम से बचेगा?

जो आज्ञा को मानता है, वह जोखिम से बचेगा।

सभोपदेशक 8:8

किस पर किसी का वश नहीं चलता है?

प्राण पर किसी का वश नहीं चलता है, और अपनी मृत्यु के दिन पर किसी के पास अधिकार नहीं है।

सभोपदेशक 8:10

दुष्टों का स्मरण कहाँ नहीं रहा?

जिस पवित्रस्थान में वे आया-जाया करते थे और जिस नगर में वे ऐसा करते थे वहाँ भी उनका स्मरण न रहा।

सभोपदेशक 8:12

चाहे पापी सौ बार पाप करे अपने दिन भी बढ़ाए, तो जो परमेश्वर से डरते हैं, उनके साथ क्या होगा?

चाहे पापी सौ बार पाप करे अपने दिन भी बढ़ाए, तो भी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते हैं और उसको सम्मुख जानकर भय से चलते हैं, उनका भला ही होगा।

सभोपदेशक 8:15

उपदेशक आनन्द को क्यों सराहता है?

उपदेशक आनन्द को सराहते हैं, क्योंकि सूर्य के नीचे मनुष्य के लिये खाने-पीने और आनन्द करने को छोड़ और कुछ भी अच्छा नहीं।

सभोपदेशक 8:17

मनुष्य किस चीज की थाह नहीं पा सकता है?

जो सूर्य के नीचे किया जाता है, उसकी थाह मनुष्य नहीं पा सकता।

सभोपदेशक 9:1

क्या परमेश्वर के हाथों में है?

धर्मी और बुद्धिमान लोग और उनके काम परमेश्वर के हाथ में हैं।

सभोपदेशक 9:2

सभी के लिए क्या एक समान होता है?

सब बातें सभी के लिए एक समान होती हैं।

सभोपदेशक 9:3

मनुष्यों के मन किससे भरे हुए हैं?

मनुष्यों के मनों में बुराई भरी हुई है।

सभोपदेशक 9:5

मरे हुए को कुछ और बदला क्यों नहीं मिल सकता है?

उनको कुछ और बदला नहीं मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है।

सभोपदेशक 9:6

क्या नाश हो चूका है?

मृत लोगों का प्रेम और उनका बैर और उनकी डाह नाश हो चुकी है।

सभोपदेशक 9:10

लोगों को जो काम मिले उसे कैसे करना चाहिए।

जो काम उन्हें मिले उसे उनकी शक्ति भर करना चाहिए।

सभोपदेशक 9:12

मनुष्य किसमें फँस जाते हैं?

मनुष्य दुःखदाई समय में जो उन पर अचानक आ पड़ता है, फँस जाते हैं।

सभोपदेशक 9:15

उस दरिद्र, बुद्धिमान पुरुष का क्या हुआ, जिन्होंने अपनी बुद्धिमानी से नगर को बचाया?

किसी ने भी उस दरिद्र, बुद्धिमान पुरुष को स्मरण न रखा, जिसने अपनी बुद्धिमत्ता से नगर को बचाया।

सभोपदेशक 9:18

लड़ाई के हथियारों से उत्तम क्या है?

लड़ाई के हथियारों से बुद्धि उत्तम है।

सभोपदेशक 10:3

कौन सी बात सबको यह साबित करती है कि मनुष्य मूर्ख है?

जब किसी मनुष्य की समझ काम नहीं देती, तब वह सबसे कहता है कि वह मूर्ख है।

सभोपदेशक 10:7

उपदेशक ने दासों को क्या करते हुए देखा?

उपदेशक ने दासों को घोड़ों पर चढ़े हुए देखा।

सभोपदेशक 10:8

जब कोई बाड़ा तोड़े, तो क्या हो सकता है?

जब भी कोई बाड़ा तोड़े, तो उसको सर्प डसेगा।

सभोपदेशक 10:10

यदि कुल्हाड़ा थोथा हो और मनुष्य उसकी धार को पैनी न करे तो क्या होता है?

यदि कुल्हाड़ा थोथा हो और मनुष्य उसकी धार को पैनी न करे, तो अधिक बल लगाना पड़ेगा।

सभोपदेशक 10:13

मूर्खों का अन्त कैसा होता है?

उनका अन्त दुःखदाई बावलापन होता है।

सभोपदेशक 10:16

देश पर कब हाय आता है?

यही राजा लड़का है और उसके हाकिम प्रातःकाल भोज करते हैं, तो देश में हाय आता है!

सभोपदेशक 10:18

घर कब चूता है?

हाथों की सुस्ती से घर चूता है।

सभोपदेशक 10:20

लोगों को राजा को श्राप क्यों नहीं देना चाहिए?

लोगों को राजा को श्राप नहीं देना चाहिए, क्योंकि आकाश का पक्षी तेरी वाणी को ले जाएगा, और कोई उड़नेवाला जन्तु उस बात को प्रगट कर देगा।

सभोपदेशक 11:2

सात वरन् आठ जनों को भी भाग क्यों देना चाहिए?

सात वरन् आठ जनों को भी भाग देना, क्योंकि तू नहीं जानता कि पृथ्वी पर क्या विपत्ति आ पड़ेगी।

सभोपदेशक 11:5

लोग क्या नहीं जान सकते?

लोग परमेश्वर के काम को नहीं जान सकते।

सभोपदेशक 11:6

लोगों को बीज कब-कब बोना चाहिए?

लोगों को भोर से साँझ तक बीज बोना चाहिए।

सभोपदेशक 11:10

लोगों को अपने मन से क्या दूर करना चाहिए?

लोगों को अपने मन से खेद को दूर करना चाहिए।

सभोपदेशक 12:1

लोगों को अपने सृजनहार को कब स्मरण रखना चाहिए?

लोगों को अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रखना चाहिए।

सभोपदेशक 12:3

पिसनहारियाँ क्यों काम छोड़ देंगी?

पिसनहारियाँ थोड़ी रहने के कारण काम छोड़ देंगी।

सभोपदेशक 12:4

तड़के एक जन क्यों उठ जाएगा?

तड़के चिड़िया बोलते ही एक उठ जाएगा।

सभोपदेशक 12:7

मिट्टी ज्यों की त्यों कहाँ मिल जाएगी?

मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी।

सभोपदेशक 12:9

उपदेशक लोगों को क्या सिखाता रहा?

उपदेशक लोगों को ज्ञान सिखाता रहा।

सभोपदेशक 12:11

बुद्धिमानों के वचन कैसे होते हैं?

बुद्धिमानों के वचन पैनों के समान होते हैं।

सभोपदेशक 12:12

बहुत पढने से क्या होता है?

बहुत पढ़ना देह को थका देता है।

सभोपदेशक 12:13

अन्त की बात क्या है?

अन्त की बात यह है कि लोगों को परमेश्वर का भय मानना चाहिए और उनके आज्ञाओं का पालन करना चाहिए।